वार्तालाप नं.462, कलकत्ता, दिनांक 11.12.07
Disc.CD No.462, dated 11.12.07

समयः 17.42-19.04

जिज्ञासुः कृष्ण, के हाथ में जो मुरली दिखाया वो माउंट आबू में 18 साल उनके मुख से जो मुरली चला उसका यादगार के रूप में दिखाया क्या?

बाबा: 18 साल?

जिज्ञासु: 18 साल जो मुरली चला उनके मुख से तो उसका यादगार रूप है क्या?

बाबा: भक्तिमार्ग में?

जिज्ञासु: हाँ।

Time: 17.42-19.04
Student: Is the flute shown in the hands of Krishna a memorial of the *Murlis* that were narrated through him (i.e. the soul of Krishna) for 18 years at Mt.Abu?
Baba: 18 years?
Student: Is it a memorial of the *Murlis* that were narrated through his mouth for 18 years?
Baba: In the path of devotion *(bhaktimarg)*?
Student: Yes.

बाबा: भक्तिमार्ग में जो दिखाते हैं, कृष्ण ने मुरली सुनाई। तो मुरली जड़ बांस की समझते हैं या कोई ज्ञान की मुरली है?

जिज्ञासु: ज्ञान की।

बाबा: समझने वाले क्या समझते हैं? जड़ बांस की मुरली है। अभी भी हम समझते हैं कि वो मुरली जड़ है या समझ में आने वाली है? जड़ मुरली हो गयी। सुनना, सुनाना भक्तिमार्ग में होता है और ज्ञानमार्ग में समझना और समझाना होता है। कनरस हो गया। ज्ञानमार्ग में कनरस नहीं होता है। समझ का रस होता है। तो शूटिंग खराब थोड़े ही हुई। शूटिंग सही हुई या गलत हुई? सही शूटिंग हुई।

Baba: It is shown in the path of devotion that Krishna played a flute. So, do they think about the non-living bamboo flute or is it a flute of knowledge?
Student: Of knowledge.
Baba: What do the people think? It is a non-living flute of bamboo. Even now do we feel that it is a non-living *Murli* or is it something that can be understood? It is a non-living *Murli*. Listening and narrating takes place in the path of devotion and understanding and explaining takes place in the path of knowledge. It was a pleasure for the ears. There is no pleasure for the ears in the path of knowledge. There is the pleasure of understanding. So, the shooting was not bad. Was the shooting right or wrong? It was a right shooting.

समयः 19.06-32.20

जिज्ञासुः बाबा जो 5000 वर्ष का ड्रामा में ब्रह्मा बाबा का पार्ट 50 वर्ष कम है तो सिर्फ 2018 में कृष्ण का पार्ट होगा जब संगमयुगी ल.ना. प्रत्यक्ष हो जायेंगे, लेकिन बाबा उनका तो बॉडी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

(शरीर) नहीं है। पार्ट तो साकार में बजाना पड़े ना।

बाबा: शरीर सिर्फ स्थूल ही नहीं होता है। तुम भूल गये। शरीर सिर्फ स्थूल ही होता है या सूक्ष्म भी होता है? सूक्ष्म भी शरीर होता है स्थूल भी होता है। उन्होंने दोनों प्रकार का शरीर सन् 87-88 में छोड़ा है। नहीं समझ में आया? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ, तो उसमें 50 साल जोड़ो। (किसी ने कुछ कहा।) हाँ। तो कितना आया?

जिज्ञासु: 36

बाबा: 36-37 आया।

जिज्ञासु: गुल्जार दादी में प्रवेश करते हैं तो सूक्ष्म शरीर लेके जाते हैं?

बाबा: क्यों नहीं जाते हैं और क्या बीज रूपी स्टेज रहती है?

जिज्ञासु: आपने बोला छोड़ दिया दोनों प्रकार का शरीर 87 में।

Time: 19.06-32.20

Student: Baba, Brahma Baba's part is reduced by 50 years in the 5000 years drama; so, the part of Krishna will be in 2018 when the Confluence Age Lakshmi and Narayan are revealed. But Baba, he does not have a body. Part has to be played in a corporeal form, isn't it?

Baba: Body is not just physical. You have forgotten. Is a body just physical or also subtle? There is a subtle as well as a physical body. He left both kinds of bodies in the year 87-88[1]. Did you not understand? (Someone said something.) Yes, so, add 50 years to it. (Someone said something.) Yes. So, how much does it come to?

Student: 36.

Baba: It comes to (20)36-37.

Student: When he enters in Gulzar *Dadi*, why does he enter with a subtle body?

Baba: Why not? He certainly goes (there in a subtle stage) or does he remain in a seed-form stage?

Student: You said that he left both kinds of bodies in 87.

बाबा: जैसे छोटा बच्चा होता है। भले जन्म भी ले लेता है लेकिन शैशवावस्था में कभी बच्चा अपने आप हंसता है। कोई उसको हंसाता नहीं है, हंसाने की बात भी नहीं करता, कोई लड्डू पेड़ा मूँह में नहीं देता। हंसता है। कभी रोता है। तो वो सूक्ष्म शरीर उसका पार्ट बजा रहा है या स्थूल शरीर पार्ट बजा रहा है? सूक्ष्म शरीर पार्ट बजा रहा है। भले कृष्ण की आत्मा है। अभी भी उसका बचपन ज्यादा है। कोई बच्चे होते हैं बहुत बड़े हो जाते हैं लेकिन अक्ल से कैसे रहते हैं? बुद्धू के बुद्धू रहते हैं। जब तक यज्ञोपवित न हो जाये तब तक क्या समझते हैं? ब्राह्मण, पक्का ज्ञानी ब्राह्मण नहीं है। बच्चा बुद्धि है। तो कृष्ण की आत्मा का भी यज्ञोपवित कब होगा? पहला जन्म तो लिया 98 में लेकिन वो कच्चा ब्राह्मण है। पक्का ब्राह्मण कब होगा? जब यज्ञोपवित हो। तीन सूत्रों का पूरा ज्ञान बुद्धि में बैठ जाये। अभी कृष्ण की आत्मा ये मानने के लिये तैयार है कि गीता का भगवान बाप कौन है? पढ़ने वाले मुख्य-मुख्य बच्चे कौन हैं? विष्णु की चार भुजायें कौन-कौन हैं? कौन लेफ्टिस्ट भुजायें हैं कौन राइटियस

[1] Meaning he attains the stage where he can assume the seed form stage as well.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

भुजायें हैं? कौन उपर की भुजायें हैं, कौन नीचे की भुजायें हैं? ये बात सब कृष्ण की आत्मा मानने के लिये तैयार है? अरे! एड्वांस पार्टी के बच्चों में ही मतभेद है अभी।

Baba: For example, a small child; although he takes birth, but in the infant stage sometimes the child laughs on his own. Nobody makes him laugh, nobody says anything to make him laugh either, nobody puts *laddu-peda* (sweets) in his mouth. (But) he laughs. Sometimes he cries (on his own). So, is his subtle body playing a part or is the physical body playing a part? The subtle body is playing a part. Although it is the soul of Krishna, even now there is a lot of childishness in him. There are some children who grow very big, but how do they remain through their intellect? They remain fools. Until they undergo the thread ceremony (*yagyopavit*), what do they think? He is not a Brahmin, a firm knowledgeable Brahmin (until he has undergone the thread ceremony). He has a child-like intellect. So, when will the soul of Krishna undergo the thread ceremony? He took the first birth in (19)98, but that is a (stage of) an immature Brahmin. When will he become a firm Brahmin? When he undergoes the thread ceremony. The entire knowledge of the three threads should fit into the intellect. Is the soul of Krishna now ready to accept, who is God the Father of the Gita? Who are the main children who are studying? Which are the four main arms of Vishnu[2]? Which are the leftist arms and which are the righteous arms? Which are the upper arms and which are the lower arms? Is the soul of Krishna ready to accept all these things? Arey! There is a difference of opinion among the children of Advance Party themselves.

जिज्ञासु: बाबा कृष्ण की आत्मा तो अभी बाप के अन्दर प्रवेश करके हर समय सुनते रहती हैं।

बाबा: हर समय सुनती है? फिर गुल्जार दादी में कौन पार्ट बजाता है? वो वहाँ आप जाते हैं शायद।

जिज्ञासु: वो तो हर महीने में 2 बार जाते हैं।

बाबा: और बच्चे नहीं है उनको प्रवेश करने के लिये?

जिज्ञासु: लेकिन बाबा वो इतना पावरफुल होते हुए भी क्यो नहीं मानते?

बाबा: कितना पावरफुल? तुम्हारे बुद्धि में बहुत पावरफुल भरा हुआ है। प्रभाव पड़ गया। क्या? एडवांस पार्टी के बीज रूप आत्माओं के मुकाबले कृष्ण बच्चे की आत्मा बहुत पावरफुल है।

जिज्ञासु: कृष्ण बच्चा तो भावनावादी है।

बाबा: हाँ तो पावरफुल है ना?

जिज्ञासु: पावरफुल नहीं है। कमजोर है।

Student: Baba, the soul of Krishna enters the father and keeps listening all the time.
Baba: Does he listen all the time? Then who plays the part in Gulzar *Dadi*? Perhaps you go there.
Student: He goes there twice every month.
Baba: Are there not other children for him to enter?
Student: But Baba despite being so powerful, why does he not accept?

[2] Edited.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: How powerful? Your intellect is under the impression that he is very powerful. You are influenced. What? (You think that) When compared to the seed-form souls of the advance party, the soul of child Krishna is very powerful.
Student: Child Krishna is emotional (*bhavnaavadi*).
Baba: Yes, so, he is powerful, isn't he?
Student: He is not powerful. He is weak.

जिज्ञासु: बाबा, जो पावरफुल बीज है वो 1969 में जब दादा लेखराज शरीर छोड़ दिया था और प्रवेश किया राम वाली आत्मा में तब राम वाली आत्मा का जो बॉडी है ..... ।
बाबा: दादा लेखराज की आत्मा ने राम वाली आत्मा में प्रवेश कर लिया इसका क्या प्रूफ है 69 में? 69 में प्रवेश कर लिया इसका कोई प्रूफ है?
जिज्ञासु: यदि एक घर चला जाते हैं तो नैचरली शिव और कृष्ण वाली आत्मा बाहर तो नहीं रहेगा घर में ही तो प्रवेश करेगा और जो परमनेंट (स्थायी) घर है तो घर में तो जरूर प्रवेश करेगा।
बाबा: घर एक ही है या बहुत से बच्चे हैं प्रवेश करने के लिये?
जिज्ञासु: घर तो बहुत है लेकिन पर्मनेंट एड्रेस तो एक है। जैसे हम लोग कभी कभी बाहर जाते हैं... ।
बाबा: जिसे हम पर्मनेंट समझते हैं वो परमधाम बाद में पता चलता है या पहले ही पता चल जाता है? अंतिम जन्म में ही तो पता चलता है। सन् 76 में आकरके उनको ठिकाना मिलता है। तब चन्द्रमाँ विराजमान होता है अधूरा। दिखाई पड़ता है। उससे पहले नहीं कहेंगे कि बाप प्रत्यक्ष हुआ, जिसके मस्तक पर चन्द्रमाँ विराजमान है।
Student: Baba, the powerful seed……., Dada Lekhraj left his body in 1969 and entered in the soul of Ram, the body of the soul of Ram.....
Baba: What is the proof of the soul of Dada Lekhraj having entered the soul of Ram in (19)69? Is there any proof of his having entered in 69?
Student: When one home has finished, then, naturally, Shiv and the soul of Krishna will not remain outside; he will enter the home only and he will certainly enter the home which is the permanent home.
Baba: Is there only one home or are there many children (for him) to enter?
Student: There are many homes, but the permanent address is one. For example, sometimes when we go outside....
Baba: The one whom we think to be permanent, do people come to know of that *Paramdham* later on or do they come to know of it beforehand? It is known only in the last birth. He finds the destination in the year 76. Then the incomplete moon becomes seated (on the forehead of Shankar). He becomes visible. Before that it will not be said that the Father on whose forehead the Moon is seated, was revealed.

जिज्ञासु: यदि प्रवेश करते हैं, ऐसा एक सी.डी में बोला जब प्रवेश किया तब ये जो बॉडी है शिव और राम कृष्ण को समर्पण कर दिया क्यों..।
बाबा: वो राम वाली आत्मा की भावना है। राम वाली आत्मा भी या कृष्ण वाली आत्मा भी जन्म-जन्मांतर एक-दूसरे के बच्चे बन सकते हैं या नहीं बन सकते हैं? जन्म-जन्मांतर एक-

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दूसरे के बाप बन सकते हैं या नहीं बन सकते हैं? तो शूटींग पीरीयड में भी बनते हैं। कभी मैं तेरा बाप कभी तू मेरा बाप।

जिज्ञासु: समर्पण कर दिया... ।

बाबा: तो समर्पण कब कर दिया? जब बच्चा बना तब समर्पण कर दिया? राम वाली आत्मा ने समर्पण कब कर दिया? अज्ञान काल में या ज्ञान काल में? (किसी ने कुछ कहा।) नहीं। क्या उसने बाप को पहचान लिया था 69 में? राम वाली आत्मा 69 में बाप को पहचानती थी? नहीं।

Student: It has been said in a CD that when He enters, when He entered, Shiv and Ram surrendered this body to Krishna. Why?

Baba: That is a feeling of the soul of Ram. Can the soul of Ram and the soul of Krishna become each other's child for many births or not? Can they become each other's father for many births or not? So, they become in the shooting period also. Sometimes I am your father and sometimes you are my father.

Student: He surrendered.....

Baba: When did he surrender? Did he surrender when he became a child? When did the soul of Ram surrender (his body)? Was it during the period of ignorance or in the period of knowledge? (Someone said something.) No. Had he recognized the Father in 1969? Did the soul of Ram recognize the Father in 1969? No.

जिज्ञासु: 72 के एक अव्यक्त वाणी में बोला: कि एडवांस पार्टी का कार्य चल रहा है। 73 में बोला, 2/8/73 में। तो एडवांस पार्टी का जो भी कार्य चल रहा है... ।

बाबा: तो वो बात भी पहले कौन जानेगा?

जिज्ञासु: राम वाली आत्मा।

बाबा: राम वाली आत्मा ही तो जानेगी। कृष्ण वाली आत्मा तो नहीं जानेगी।

जिज्ञासु: राम वाली आत्मा के जानने के बाद तो कृष्ण को समर्पण कर दिया बॉडी।

बाबा: उस समय नहीं समर्पण कर दिया। समर्पण बुद्धि श्रेष्ठ आत्मा वो होती है जो ज्ञान में एक सेकण्ड में आ जाये। अभी-अभी सुना और अभी-अभी आ गया और समर्पित हो गया। तुरंत दान महा कल्याण होता है या लम्बे समय तक सोचते रहे, सोचते रहे और सोच-सोच करके सरंडर किया वो ज्यादा श्रेष्ठ होता है? (किसी ने कहा - तुरंत दान।)

Student: It has been said in an *Avyakta Vani* of (the year) (19)72 that the task of the Advance Party is going on. It was told in 73, in (the *Avyakt Vani* dated) 2.8.73. So, whatever task of the Advance Party is going on....

Baba: So, who will know about that first?

Student: The soul of Ram.

Baba: Only the soul of Ram will know. The soul of Krishna will not know.

Student: So, after the soul of Ram came to know, he surrendered (his body) to Krishna.

Baba: He did not surrender at that time. A soul which enters the path of knowledge in a second is considered to be a righteous soul with a surrendered intellect. As soon as it hears, it enters the path of knowledge and surrenders. Is it considered very beneficial if someone donates immediately (on getting a thought) or is it more righteous if someone surrenders after thinking for a long time? (Someone said: immediate donation.)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: तो बाबा, समर्पण कब किया कृष्ण वाली आत्मा को?

बाबा: राम वाली आत्मा जैसे ही ज्ञान में आयेगी, समझेगी ये शिव का ज्ञान है तो श्रेष्ठ आत्मा तुरंत समर्पण हो जायेगी या देर करेगी?

जिज्ञासु: तुरंत।

बाबा: हाँ जी। 76 में क्यों? जब से बेसिक नॉलेज में है तबसे समर्पित नहीं है? उससे ज्यादा कोई पुरुषार्थी है क्या? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ तो क्या हुआ?

जिज्ञासु: तो तब तो ज्ञान में आ गया तब तो समझ में आ गया ना?

बाबा: हाँ समझ में आ जायेगा तो समर्पित नहीं होगा?

Student: So, Baba, when did he surrender (his body) to the soul of Krishna?
Baba: As soon as the soul of Ram enters the path of knowledge, as soon as it understands this is the knowledge given by Shiv, then will a righteous soul surrender immediately or will it delay?
Student: Immediately.
Baba: Yes. Why in 76? Is he not surrendered ever since he has been following the basic knowledge? Is there someone who makes more special effort for the soul *(purusharth)* than him? (Someone said something) Yes, so what happened?
Student: So, at that time he entered the path of knowledge; he understood, did he not?
Baba: Yes, when he understands, will he not surrender?

जिज्ञासु: लेकिन बॉडी को कृष्ण को समर्पित कर दिया कब?

बाबा: ओहो! तन, मन, धन सब तेरा किसको करेगा?

जिज्ञासु: शिव बाबा को।

बाबा: हाँ शिव बाबा को; किसको समझता था 69 में?

जिज्ञासु: ब्रह्मा को।

बाबा: ब्रह्मा को।

जिज्ञासु: तो ब्रह्मा को समर्पण कर दिया।

बाबा: ब्रह्मा को.. जिसको साकार भगवान समझेगा, गीता का भगवान जिसको समझेगा उसी को करेगा या दूसरे को करेगा?

Student: But when did he surrender his body to Krishna?
Baba: Oho! Whom will he surrender his body, mind and wealth?
Student: To Shivbaba.
Baba: Yes, to Shivbaba. Whom did he consider Shivbaba in 69?
Student: Brahma.
Baba: Brahma.
Student: So, he surrendered to Brahma.
Baba: To Brahma....Will he surrender to the one whom he considers as corporeal God, as the God of the Gita or to anyone else?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: तो जब समर्पण कर दिया उनको तो उन्होंने जो बेबी बुद्धि आत्मा जो ब्रह्मा है कृष्ण की सोल तब से सब यज्ञ चल रहे हैं?

बाबा: तो यज्ञ नहीं चल रहा है? यज्ञ नहीं चल रहा है? यज्ञ असली तब चलता है जब बाप आकरके ज्ञान यज्ञ की बात समझाते हैं। ज्ञान को यज्ञ कहा जाता है। दीवालों को यज्ञ नहीं कहा जाता, हुजूम को यज्ञ नहीं कहा जाता।

Student: So, when he surrendered to him, then the *yagya* is being run by the soul with a baby-like intellect, i.e. Brahma, the soul of Krishna?

Baba: So, is the *yagya* not functioning? Is the *yagya* not working? The *yagya* functions in a true sense when the Father comes and explains the issue of the *gyan yagya* (*yagya* of knowledge). Knowledge is called *yagya*. (A structure made of) walls is not called *yagya;* a crowd is not called *yagya.*

जिज्ञासु: ज्ञान यज्ञ तो 76 से ...

बाबा: हाँ जी, जब अपनी पहचान हो जाये और अपने बाप की पहचान हो जाये तब कहेंगे ज्ञान यज्ञ।

जिज्ञासु: तो तब से जब शुरु कर दिया और कृष्ण वाली आत्मा को समर्पण कर दिया....

बाबा: अरे तो वो भक्तिमार्ग हुआ या ज्ञानमार्ग हुआ? 69 में जब ज्ञान मार्ग में बेसिक में आयी राम वाली आत्मा तो वो भक्तिमार्ग शुरु किया या ज्ञानमार्ग किया? भक्तिमार्ग है। भक्तिमार्ग में जो जितना आगे जायेगा, जितनी भक्ति करेगा जितनी अव्यभिचारी भक्ति करेगा उतना ज्यादा ज्ञान उठायेगा।

Student: *Gyan yagya* has started from 76.....

Baba: Yes, when someone recognizes himself and recognizes his Father, then it will be said to be *gyan yagya*.

Student: So, ever since it was started and till the time when he surrendered to the soul of Krishna....

Baba: Arey, so was it a path of devotion *(bhaktimarg)* or a path of knowledge? When the soul of Ram entered the path of basic knowledge in 69, did he start the path of *bhakti* or the path of knowledge? It was a path of *bhakti*. The more someone progresses in the path of *bhakti*, the more *bhakti* someone performs, the more someone performs unadulterous *bhakti*, the more he will grasp knowledge.

जिज्ञासु: तो मेरा कहने का मतलब है 76 में जो राम वाली आत्मा ज्ञानमार्ग में आयी और जब समर्पण कर दिया....

बाबा: फिर वही 76 में समर्पित कर दिया। 69 से क्यों नहीं समर्पित कर दिया? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ तो वही तो कह रहे हैं।

जिज्ञासु: 69 में जब समर्पण कर दिया तो कृष्ण वाली आत्मा को तो समर्पण कर दिया बॉडी पूरा।

बाबा: अरे! भक्तिमार्ग में किसको, गुरुओं को नहीं समर्पित किया जाता है, किसको समर्पित किया जाता है? और जो अव्वल नम्बर गुरु को समर्पित कर दिया , तो और अच्छी बात हुई

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

या खराब बात हुई? (किसी ने कुछ कहा।) फिर तुम यज्ञ समझते ही नहीं। समझने-समझाने को यज्ञ कहा जाता है या सुनने-सुनाने को यज्ञ कहा जाता है? 69 में सुनना-सुनाना हो रहा था या समझना-समझाना हो रहा था?

Student: So, I mean to say that the soul of Ram which entered the path of knowledge in 76 and when he surrendered.....

Baba: You are again saying the same thing that he surrendered in 76. Why not that he surrendered since 69? (Someone said something.) Yes, that is what I am saying.

Student: When he surrendered in 69, he surrendered his entire body to the soul of Krishna.

Baba: Arey! In the path of devotion, if not to the *gurus* then to whom do people surrender (themselves)? And if he surrendered to the number one *guru*, is it a good thing or a bad thing? (Someone said something.) Then you don't understand the meaning of *yagya* at all. Does *yagya* mean 'understanding and explaining' or does *yagya* mean 'listening and narrating'? Was 'listening and narrating' taking place in 69 or was 'understanding and explaining' taking place?

किसीने कहा: माउन्ट आबू के संगठन के बारे में बोल रहे हैं।

बाबा: वही माउंट आबू का संगठन... कम्पिल के यज्ञ के बारे में नहीं बता रहे हैं।

जिज्ञासु: राम वाली आत्मा के अन्दर में जब पूरा ज्ञान बैठ गया तब ज्ञान यज्ञ शुरू हुआ?

बाबा: ज्ञान यज्ञ कहेंगे। समझने और समझाने वाली बात का फाउंडेशन पड़ जाये। मैं आत्मा कौन और मेरा बाप कौन? तो कहेंगे ज्ञान यज्ञ का फाउंडेशन पड़ गया।

जिज्ञासु: अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ - ये कब से स्टार्ट हो गया?

बाबा: जब से बाप आता है तब से अविनाशी ज्ञान यज्ञ होता है। इसका नाम ही है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र प्रत्यक्ष कब से हुआ? रुद्र माने क्या होता है? रौद्र रूप धारण करना। किसके लिये रौद्र रूप? दुनिया वालों के लिये रौद्र रूप धारण किया या बेसिक नॉलेज वालों के लिये रौद्र रूप धारण किया? बेसिक नॉलेज के ब्राह्मणों ने जान लिया - अरे, ये तो बड़ा विप्लव हो गया। ये तो सारा चक्कर ही उल्टा हो गया। दुनिया पलट गयी। हाँ, रविन्द्र भाई सात दिन का कोर्स लेके तुरंत दौड़े -2 गये माउंट आबू में दादी के पास "दादी जी प्रलय हो गई, कुछ करो।" जगदीश भाई के पास भेज दिया दादी ने।

Someone said – He is speaking about the gathering at Mount Abu.

Baba: Yes, the gathering at Mt.Abu..... I am not talking about the *yagya* of knowledge at Kampil.

Student: Did the *gyan yagya* begin when the entire knowledge fitted in the soul of Ram?

Baba: It will be called *gyan yagya*. The foundation of 'understanding and explaining' should be laid. (When he understands) 'which soul am I and who is my Father?' It will then be said that the foundation of *gyan yagya* was laid.

Student: Since when did this imperishable *Rudra gyan yagya* (the *yagya* of the knowledge of *Rudra*) start?

Baba: The imperishable *gyan yagya* begins ever since the Father comes. Its very name is *Rudra gyan yagya*. Since when was *Rudra* revealed? What is meant by *Rudra*? (It means) assuming a fierce (*raudra*) form. Fierce form for whom? Did he assume a fierce form for the people of the world or for those who follow the basic knowledge? The Brahmins who were following the basic knowledge came to know, *Arey*, a big revolution has taken place. The

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

entire cycle has turned upside down. The world has turned upside down. Yes, immediately after taking the seven days course Ravindra *bhai* ran to meet *Dadi* at Mt.Abu saying '*Dadiji*, a disaster has taken place; do something." *Dadi* sent him to *Jagdish bhai*.

जिज्ञासु: रौद्र रूप किसका होगा?

बाबा: रुद्र का।

जिज्ञासु: शंकर का?

बाबा: रुद्र का। ज्ञान यज्ञ का नाम क्या है? रुद्र... शंकर ज्ञान यज्ञ कहा जाता है या रुद्र ज्ञान यज्ञ कहा जाता है? शंकर का काम शंकर करे तो संघारकारी कहा जाये। काम किया? नहीं। लेकिन रौद्र रूप किसने धारण किया? सन् 76 में ब्राह्मणों की दुनिया के अन्दर रौद्र रूप अनुभव हुआ कि नहीं ब्राह्मणों को? हुआ। तो रुद्र हो गया। (किसी ने कुछ कहा।) शिव ही साकार में प्रवेश करता है तो रुद्र कहा जाता है। शिव का नाम बिन्दी का नाम है। वो नाम कभी बदलता नहीं । जब शरीर बदलते हैं तो नाम बदल जाता है। तो रुद्र नाम कब पड़ा? जब शरीर बदल करके रौद्र रूप धारण किया। तो रुद्र ज्ञान यज्ञ नाम पड़ा।

Student: Who will assume a fierce form (*raudra roop*)?
Baba: *Rudra*.
Student: Shankar?
Baba: *Rudra*. What is the name of the *gyan yagya*? *Rudra*....Is it called *Shankar gyan yagya* or *Rudra gyan yagya*? If Shankar performs Shankar's task, he will be called a destroyer. Did he perform the task? No. But who assumed the fierce (*raudra*) form? Did the Brahmins experience the fierce form within the world of Brahmins in the year 76 or not? They did. So, he happened to be *Rudra*. (Someone said something.) When Shiv Himself enters the corporeal one He is called *Rudra*. The name Shiv is the name of a point (i.e. soul). That name never changes. The name changes when the bodies change. So, when did he receive the name *Rudra*? It is when He changed the body and assumed a fierce form. Then the name *Rudra gyan yagya* was given.

समयः 32.20 - 32.50

जिज्ञासुः बाबा, मधुबनवालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, गीता पाठशाला वालों को गीतापाठशाला छोड़ना पड़ेगा और ज्ञानसरोवर वालों को ज्ञानसरोवर छोड़ना पड़ेगा - 2018 के बाद या पहले?

बाबा: माना प्रोपर्टी - वॉपर्टी समेटनी है क्या? तब तक चलने दें?

जिज्ञासु: ऐसा तो है बाबा।

बाबा: ऐसा तो है? काल करै सो आज कर। आज करै सो अब। शरीर छूट जाये कब पता?

Time: 32.20 - 32.50
Student: Baba, residents of *Madhuban* will have to leave *Madhuban*, residents of *gitapathshalas* will have to leave *gitapathshalas* and the residents of *Gyansarovar* will have to leave *Gyan sarovar* , is it after 2018 or before it?
Baba: Does it mean you want to wind-up your property? Till then will you retain it?
Student: Baba, it is like that.
Baba: Is it like that? Do today whatever you have to do tomorrow. Whatever you have to do today, do it now; we don't know when we may have to leave our body.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 40.40 - 43.10

जिज्ञासुः बाबा, चन्द्रमाँ प्रशान्त महासागर में मिल गया, तब दिन ही दिन होगा।

बाबा: हाँ, चन्द्रमाँ जो है वो प्रशांत महासागर में एक हो जाये। क्या? जो पृथ्वी का टुकड़ा है वो टुकड़ा माता के गर्भ में चला जाये। एक हो जाये।

जिज्ञासु: क्लीयर नहीं हुआ बाबा।

बाबा: क्यों नहीं क्लीयर हुआ? ज्ञान चन्द्रमाँ आत्मा है और ज्ञान चन्द्रमाँ स्थूल शरीर भी है। तो कृष्ण की आत्मा का स्थूल शरीर कब होगा? सतयुग में होगा। और आत्मा सम्पन्न कब होगी? संगम में होगी। तो संगम में ब्राह्मणों की दुनिया में जो कृष्ण वाली आत्मा है, एकाकार हो जायेगी विष्णु के साथ या विष्णु की चार भुजाओं के साथ। क्या? एकाकार हो जायेगी माना पृथ्वी अलग नहीं है और चन्द्रमाँ अलग नहीं है। ये बुद्धि से समझने की बात है। स्थूल में ऐसा नहीं होगा।

Time: 40.40 - 43.10

Student: Baba, when the Moon merges in the Pacific Ocean, there will be just day.

Baba: Yes, the Moon should merge in the Pacific Ocean. What? The piece of Earth should go into the womb of the mother (Earth). It should merge (with Earth).

Student: Baba, it is not clear.

Baba: Why is it not clear? The moon of knowledge is a soul and the moon of knowledge is also a physical body. So, when will the soul of Krishna have a physical body? It will be in the Golden Age and when will the soul become complete? It will become (complete) in the Confluence Age. So, the soul of Krishna in the Confluence Age world of Brahmins will blend to become one with Vishnu or with the four arms of Vishnu. What? When it blends to become one, it means that the Earth and the Moon are not separate. It is a subject to be understood through the intellect. It will not happen in a physical form.

जिज्ञासु: माना स्थूल चन्द्रमाँ पृथ्वी पर नहीं आयेगा, ऐसा ही है?

बाबा: जब टोटल स्थूल में विनाश होगा तो स्थूल चन्द्रमाँ स्थूल पृथ्वी में आ जायेगा।

जिज्ञासु: प्रशांत महासागर समतल भूमि हो जायेगा?

बाबा: हाँ जी। समतल भूमि नहीं हो जायेगा। समन्दर हो जायेगा।

जिज्ञासु: अभी तो समन्दर ही है ना?

बाबा: समन्दर है लेकिन इतना गहरा है कि उसकी थाह कोई ले नहीं सकता। उस चंद्रमाँ में भी बहुत गहरे-गहरे गड्ढे हैं।

जिज्ञासु: माना सी लेवल (sea level - समुद्र स्तर) बहुत ऊंचा हो जायेगा।

बाबा: हाँ। लेवल उंचा हो जायेगा माना उथला हो जायेगा। लेकिन ये नहीं कि जमीन हो जायेगी।

Student: Does it mean that the physical Moon will not come on Earth?

Baba: When the total destruction takes place in physical , the physical Moon will come on the Earth.

Student: Will the Pacific Ocean become a level land (*samtal bhumi*)?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Yes. It will not become a level land . It will become (merge in) an ocean.
Student: Now, it is already an ocean, isn't it?
Baba: It is an ocean, but it is so deep that nobody can measure its depth. There are a lot of deep pits in that Moon as well.
Student: It means that the sea level will rise very high.
Baba: Yes. The level will rise, i.e. it will become shallow. But it is not true that it will change into land.

समयः 43.11 - 47.30

जिज्ञासुः बाबा अभी जो नया-नया आत्मायें ज्ञान सुन रहे हैं और बाप के प्रति निश्चयबुद्धि बैठ रहे हैं, तो उनको याद क्या परमधाम में, सूक्ष्म परमधाम में वहां सिखाना है या कि बाबा का जो भृकुटि है उसमें सिखाना है?
बाबा: ये तो जैसी जिसकी धारणा होती है वो वैसे ही सिखाता है। चोर की चोरी की धारणा होगी तो चोरी करना ही सिखायेगा। और साहू की साहूपने की धारणा होगी तो साहूकार बनना ही सिखायेगा।
जिज्ञासु: सत्य क्या हुआ?
बाबा: हर आत्मा के लिये सत्य अलग-अलग है। इब्राहिम की आत्मा के लिये सत्य जो है वो नारायण वाली आत्मा के लिए सत्य नहीं है।

Time: 43.11 - 47.30
Student: Baba, the new souls who are listening to knowledge now and are developing a faithful intellect for the Father; so, should we teach them to remember (Baba) in Supreme Abode *(Paramdham)*, the subtle Supreme Abode or should we teach them to remember (the Supreme Soul) in the middle of Baba's forehead *(bhrikuti)*?
Baba: As regards this, everyone teaches according to his/her *dhaarna* (inculcations). If a thief has inculcated theft, he will teach only to steal. And if a rich person (merchant) has an inculcation of prosperity , he will teach only to become a prosperous person.
Student: What is the truth?
Baba: The truth is different for every soul. That which is truth for the soul of Abraham is not the truth for the soul of Narayan.

जिज्ञासु: लेकिन शिवबाबा इस क्वेशन का क्या सत्य आंसर (जवाब) देगा?
बाबा: बता दिया ना। हर आत्मा के लिये सत्य अलग-अलग है। (किसी ने कुछ कहा।) नहीं। निश्चय बुद्धि के अनुसार।
जिज्ञासु: लेकिन उसका जब तक कोर्स पूरा नहीं होता है एड्वांस का तब तक वो साकार बाबा को देखते नहीं है इसलिये हम पूछ रहे हैं तब तक वो बिन्दु को याद करते रहेंगे या साकार में याद करेंगे?
बाबा: साकार बाबा को ज्ञान की आँख से देखा जाता है या स्थूल आँखों से देखा जाता है? ऐसी-ऐसी बान्धेली मातायें हैं जो कई-कई साल हो गये और उन्होंने स्थूल आँखों से बाबा को देखा ही नहीं और उनके लेटर्स पढो़ तो ऐसा लगेगा की आहा हा हा हा ! इतना निश्चय बुद्धि तो और कोई हो ही नहीं सकता।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: But, what true answer would Shivbaba give to this question?
Baba: It has already been said, hasn't it? The truth is different for every soul. (Someone said something.) No. (It is) according to the level of a faithful intellect.
Student: But until he completes the (advance) course, he doesn't see corporeal (*sakar*) Baba, that is why I am asking whether he should continue to remember (Baba) as a point or through the corporeal one until then?
Baba: Is *sakar* Baba seen through the eyes of knowledge or through the physical eyes? There are such mothers in bondages that it has been many years (since they have entered the path of knowledge) and they have not seen Baba through the physical eyes at all and if you read their letters, you will feel as if 'Aha.. ha…ha.. ha', nobody can have such a faithful intellect at all'.

जिज्ञासु: ऐसा बोला कि दो महीना चिट्ठी न आये तो वो बच्चा मर गया।
बाबा: चिट्ठी ना आये? चिट्ठी क्यों नहीं आती? चिट्ठी की ही तो बात कर रहे हैं। भट्ठी ना भी हो तो भी उनकी चिट्ठी आयेगी, तो भी उनके फोन आयेंगे।
जिज्ञासु: बाबा, पर सम्मुख तो नहीं आ सकते ना।
बाबा: इन मुख की आँखों से देखने में आता है भगवान या ज्ञान की आँख से देखने में आता है?
जिज्ञासु: ज्ञान की आँख।
बाबा: तो ज्ञान की आँख दूर बैठे भी निश्चय कर सकती है। क्या गांधी जी को सबने देखा है? फिर गांधी जी हुए या नहीं हुए? गांधी जी याद आता है या नहीं आता है? आता है।
Student: It has been said that if a child's letter is not received for two months it is as if the child has died.
Baba: Letter is not received? Why is the letter not received? We are talking of the letter only. Even if they (the mothers in bondage) have not undergone *bhatti*, their letters will be received, their phone calls will be received.
Student: But Baba they cannot meet face to face, can they?
Baba: Can God be seen through these eyes of the face or can He be seen through the eyes of knowledge?
Student: The eyes of knowledge.
Baba: So, the eyes of knowledge can develop faith in spite of sitting far away. Has everyone seen Gandhi*ji*? Then, did Gandhi*ji* exist or not? Does Gandhi*ji* cometo your mind or not? He comes to the mind.

जिज्ञासु: तो सी. डी में जो बाबा का जो चित्र दिखाके उसको याद सिखायेंगे, हें?
बाबा: ये पढ़ाई पढ़ने का और पढ़ाई पढ़ाने का, बाप समान बनने का और आप समान बनाने का हरेक का लक्ष्य अपना-अपना है। जो जिस लक्ष्य को प्राप्त करने का लक्ष्य ले लिया वो दूसरों को भी वो ही पढ़ायेगा। तब उसको संतोष आयेगा कि हमने पूरी पढ़ाई पढ़ी और दूसरों को पूरी पढ़ाई पढ़ाई।
Student: So, we will make them remember (Baba) by showing them the picture of Baba that appears in the CD, is it ok?
Baba: Everyone has an individual target of studying and teaching the knowledge, of becoming equal to the Father and making others equal to themselves. Whatever target he has

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

set for himself to attain, he will teach the same to the others . Then he will feel satisfied that he has studied the complete knowledge and also taught others the complete knowledge.

जिज्ञासु: बाबा उन्होंने भट्ठी नहीं की है ना, इसलिये बोल रहे है कि सी. डी में दिखाके याद करना सिखायेंगे ता अच्छा होगा ना ?

बाबा: कोर्स तो हुआ?

जिज्ञासु- हाँ।

बाबा: कोर्स किसने कराया?

जिज्ञासु: हमने कराया।

बाबा: हमने कोर्स कराया तो हमने फोर्स भरा?

Student: Baba, they have not done *bhatti*; this is why I am asking, if we should show them (Baba's face) on the CD and teach them to remember, it will be fine, will it not?
Baba: Did he complete the course?
Student: Yes.
Baba: Who explained the course?
Student: I explained the course.
Baba: (Ask yourself) When I explained the course, did I fill him with force (i.e. power)?

जिज्ञासु: माता जी तो बहुत रोते हैं , बाबा से मिल नहीं पाते हैं। उनका युगल भट्ठी नहीं करने देते हैं।

बाबा: जिसको फोर्स भर जायेगा.....(किसी ने कुछ कहा।) नहीं, नहीं। जिसको पूरा फोर्स भर जायेगा और वो टाईम जब आयेगा जब पूरा फोर्स भर जायेगा तो जो 16000 किरणें हैं, वो 16000 किरणें बन्धन में रहेंगी या निर्बन्धन हो जायेंगी? वो किसी के बन्धन में रहने वाली नहीं हैं।

जिज्ञासु: जो बन्धन में रहेगा वो 16000 के बाद आयेगा?

बाबा: अरे भगवान मिल गया तो बन्धन किस बात का?

Student: The (concerned) mother cries a lot that she is unable to meet Baba. Her husband is not allowing her to do *bhatti*.
Baba: The one who is filled with force…. (Someone said something.) No. No. The one who is filled with complete force and when the time comes, when they are filled with complete force, then will the 16000 rays remain under bondage or will they become free? They are not going to remain under the bondage of anyone.
Student: Will those who remain under bondages come after 16000?
Baba: Arey, when they have found God, where is the question of any bondage?

समयः 47.33-52.45

जिज्ञासुः श्याम सुंदर की बात कम्प्लीट नहीं हुआ।...

बाबा: कम्प्लीट करो ना।

जिज्ञासु: बाबा, जब तक ब्रह्मा सो विष्णु नहीं बनता है और कृष्ण की सोल... क्योंकि राम तो याद में रहते हैं। शिव बाबा तो पढ़ाते हैं, रास्ता बताते हैं और कुछ नहीं करते हैं। अकर्ता

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

है और राम वाली आत्मा याद में रहता है और कृष्ण वाली आत्मा सब कुछ करते रहते है। हजार भुजा में प्रवेश भी करते है और प्रवेश करके पार्ट बजाते है और बेसिकली बुद्धु है। अभी भी शिव शंकर गीता का भगवान है वो ही नहीं जानते है। एड्मिनिस्ट्रशन भी चलाते है। तो इसलिये जब तक ब्रह्मा सो विष्णु नहीं होगा 2018 तक तब तक यज्ञ में अशांति चलता ही रहेगा।

Time: 47.33-52.45
Student: The issue of *Shyam-Sundar* has not been completed.
Baba: Complete it, won't you?
Student: Baba, until Brahma becomes Vishnu and the soul of Krishna....because (the soul of) Ram remains in remembrance. Shivbaba teaches (us), shows (us) the path and does not do anything else. He is *akarta* (one who does not perform any actions) and the soul of Ram remains in remembrance and the soul of Krishna keeps doing everything. He enters thousand arms and plays a part by entering and he is basically stupid. Even now he does not even know that Shiv-Shankar is the God of the Gita. He also runs the administration. So, therefore, until Brahma does not become Vishnu till 2018, disturbances will continue in the *yagya*.

बाबा: अरे तो श्याम रहेगा या सुंदर हो जाएगा तब तक? श्याम ही रहेगा ना? तो क्या हुआ? इसमें नई बात क्या है?
जिज्ञासु: नई बात है ना। बहुतों को समझ में नहीं आता है.....
बाबा: क्यों नहीं समझ में आता है?
जिज्ञासु: ये जो श्याम का जो पार्ट चल रहा है ये शिवबाबा नहीं बजाता हैं श्याम पार्ट, शिव बाबा के ऊपर नहीं लागू होता है।
बाबा: माने शंकर जो पार्ट बजाता है; मुरली में बोला है, देव देव महादेव। वह भी मैं हूँ। ये किसने बोला? महादेव का जो पार्ट बजाने वाला है वो राम वाली आत्मा है या शिव बजाता है? ब्रह्मा ने जो सहनशक्ति का पार्ट बजाया वो कृष्ण की सोल ने बजाया या वो सहनशक्ति का पार्ट शिव ने बजाया? अगर कृष्ण की आत्मा में बजाने की योग्यता होती तो 63 जन्म में भी बजा लिया होता।
Baba: Arey, so, will he remain *Shyam* (of black complexion) or will he have become *Sundar* (beautiful/fair) by then? He will remain *Shyam*, will he not? So, what happened? What is the new thing in this?
Student: It is indeed a new thing. Many people don't understand…….
Baba: Why don't they understand?
Student: The part of *Shyam* that is going on; Shivbaba does not play that part; it does not apply to Shivbaba.
Baba: It means that the one who plays the part of Shankar, it has been said in the *Murlis* (for that), *Dev-Dev-Mahadev* (great deity), that is also Me. Who said this? Is it the soul of Ram or is it Shiv who plays the part of *Mahadev*? In case of the part of tolerance played by Brahma, did the soul of Krishna play the part of tolerance or did Shiv play the part of tolerance? If the soul of Krishna had the capacity to play that role, it would have played that role for 63 births as well.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: माने इन्द्रियों से भी शिव की सोल सब पार्ट बजाती है?
बाबा: शिव की सोल पतित पावन है; पतित पावन का पार्ट कौन बजाता है? राम वाली आत्मा बजाती है या शिव की आत्मा बजाती है? (सबने कहा - शिव की।) तो पूछने की क्या दरकार है इसमें? मूंझने की तो कोई दरकार ही नहीं है।
जिज्ञासु: ...बजायेंगे तो श्याम पार्ट क्यों बजायेंगे? हमेशा सुन्दर पार्ट बजायेंगे।
बाबा: ये तो देखने वालों की आँखों का अंतर है। आँखें जो हैं ऐसी सोने की नहीं बनी हुई हैं। उन्हें ये दिखाई पड़ता है ये काला पार्ट बजाता है। हम क्षरित होने वाले हैं तो ये भी क्षरित होता होगा, हम डिस्चार्ज होने वाले हैं तो ये भी डिस्चार्ज होता होगा, हम ऑपरेशन करवाय देते हैं तो ये भी ऑपरेशन करवा देता होगा।
Student: Does it mean that even through the organs, the soul of Shiv plays all the parts?
Baba: Shiv's soul is the Purifier of the sinful ones; who plays the part of the purifier of the sinful ones? Does the soul of Ram play that part or does the soul of Shiv play that part? (Everyone said: of Shiv). So, where is the need to ask in this? There is no need to be confused at all in this.
Student:..... If He plays a part, why will He play a *Shyam* (dark) part? He will always play a beautiful (fair) part.
Baba: It is the difference of vision of the observers. The eyes are not made up of gold. They can see that this one plays a dark part. We get discharged; so, he too must be getting discharged; we are the ones who get discharged, so this one also must be getting discharged; we undergo operation; so, this one would also be undergoing operation.

जिज्ञासु: बाबा, जो भी पार्ट बजायेंगे तो जब शिवबाबा का पार्ट शुरु हुआ एड्वांस में तब से तो वैकुण्ठ का जो नजारा दिखाई देना शुरू होगा ।
बाबा: वो एक आत्मा को दिखाई देगा या सबको दिखाई देगा? जो सन् 76 से नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश की घोषणा की गई है, वो अनेकों के लिये की गई है या एक के लिये की गई है? एक की बात है। एक ही निश्चय बुद्धि बनता है।
Student: Baba, whatever part He plays, so, ever since Shivbaba's part started in the advance (party), the scenes of heaven will become visible.
Baba: Will that be visible to one soul or to everyone? Was the declaration of establishment of the new world and destruction of the old world since the year (19)76 made for many (souls) or for one? It is the issue of one. Only one develops a faithful intellect.

जिज्ञासु: बाबा 31.12.03 के अव्यक्त वाणी में बोला है कि 2003 तक श्याम का पार्ट चला और 2004 से सुन्दर का पार्ट चला। लास्ट में अति सुन्दर का पार्ट होगा।
बाबा: लास्ट में अति सुन्दर। अति सुन्दर का मतलब है 100% सुन्दर। (किसी ने कुछ कहा।) हाँजी, हाँजी सही, ठीक बात है।
Student: Baba, it has been said in an *Avyakta Vani* dated 31.12.03 that the *Shyam* (dark) part was played till 2003 and the *Sundar* (fair) part was played since 2004. In the last period, the part of the most beautiful one will be played.
Baba: Most beautiful in the last period. Most beautiful means 100% beautiful. (Someone said something). Yes, yes. It is correct.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: 2004 से सुन्दर का पार्ट शुरु हो गया।

बाबा: क्योंकि शूटिंग का जो पीरियड है, कलियुगी शूटिंग का पीरियड वो खत्म हो गया और संगमयुग में जो शूटिंग के अन्दर शूटिंग है वो शुरू हो गई। ज्यादा पतन जो है वो 2036 तक होता है या संगमयुग में जो शूटिंग होती है उसमें ज्यादा पतन होता है? संगमयुग के अन्दर जो चारों युगों की शूटिंग चलती है और शूटिंग के भी अन्दर जो शूटिंग चलती है उसमें सबसे जास्ती पतन होता है 2018 तक। उसके बाद एक तरफ प्रत्यक्षता और दूसरी तरफ विनाश के नजारे। एक तरफ स्थापना के नजारे और दूसरे तरफ विनाश के नजारे। बच्चों को स्थापना दिखाई पड़ेगी नम्बरवार और जो बच्चे नहीं बने होंगे साढे चार लाख की ऊपर की स्टेज के होंगे, उनको विनाश ही विनाश दिखाई पड़ेगा।

Student: The part of the beautiful one started since 2004.

Baba: It is because the shooting period, the shooting period of Iron Age ended and the shooting within the shooting in the Confluence Age began. Does more downfall take place till 2036 or does more downfall take place during the shooting within the Confluence Age? The maximum downfall takes place in the shooting within the shooting of the four Ages that takes place in the Confluence Age till 2018. After that, on the one side revelation will take place and on the other side there will be scenes of destruction. On the one side there will be scenes of establishment and on the other side there will be scenes of destruction. Children will see the establishment number wise and those who would not have become children, those who will be in a stage of souls other than that of the four and a half lakhs (450 thousands), will see just destruction.

समयः 55.03-57.10

जिज्ञासुः बाबा गीता में जो है दृष्ठभ्याहम इदं कृष्णम्.....। (श्लोक) तो क्या प्रजापिता की बात है?

बाबा: भक्तिमार्ग में जो कृष्ण जहाँ-जहाँ आया है या श्रीमद भगवत गीता जिसे कहा गया है उसमें कृष्ण नाम जहाँ-जहाँ आया है वो शिव के लिये आया है या साकार के लिये आया है? (किसीने कुछ कहा।) जिन्होने प्रश्न किया है वो बताए। जहाँ जहाँ कृष्ण आया है वो किसके लिये आया है?

जिज्ञासु: शिव के लिये तो है।

बाबा: हाँ शिव के लिये आया है। तो शिव को दृष्ठव्य करो। देखने योग्य शिव है।

Time: 55.03-57.10

Student: Baba, it is mentioned in the Gita – *Drishtabhyaaham idam Krishnam.....* (shloka) So, does it refer to Prajapita?

Baba: In the path of devotion, wherever the word 'Krishna' has been mentioned in (the scripture) *Shrimad Bhagwat Gita*, has it been mentioned for Shiv or for the corporeal one? (Someone said something.) The one who has asked the question should speak. Wherever the word 'Krishna' has been mentioned, to whom is it referred?

Student: It is certainly for Shiv.

Baba: Yes, it has been mentioned for Shiv. So, see Shiv. Shiv is worth seeing.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: ना बोला है एका..... स्थितो....

बाबा: हाँ एकाग्र हो करके उसको देखो। थोडी़ भी बुद्धि चंचल हुई तो वो नहीं दिखाई पड़ेगा। दुनिया दिखाई पड़ेगी। कृष्ण की तो बात ही नहीं है। कृष्ण का तो नाम डाल दिया है भगवान के रूप में। है तो शिव की बात और शिव भी कोई साकार के द्वारा पहचाना जाता है। बिन्दी के रूप में तो पहचाना ही नहीं जा सकता।

जिज्ञासु: फिर भी बोलता है उनका तीन पाँव अमृत और एक पाद माया में जाता है, कहता है।

बाबा: तो क्या हुआ? सही बात तो है।

जिज्ञासु: ----(श्लोक)

बाबा: हाँ, जो साकार पार्ट है वो सम्पूर्ण शिव का ही पार्ट है या जिसका शरीर है उसका भी पार्ट है? अरे वो मुर्दा तो नहीं है? मुर्दा है क्या? उसका भी पार्ट है।

जिज्ञासु: जो सृष्टि का बीज है उनमें ही उनका सृष्टि प्रकाश होता है।

बाबा: हाँ जी।

Student: No, it has been said, *Eka…… ……. sthito....*

Baba: Yes, concentrate (your mind) and see Him. Even if your intellect becomes inconstant a little, He will not be visible. You will see the world. It is not about Krishna at all. Krishna's name has been inserted in the form of God. It is actually about Shiv and Shiv is recognized through a corporeal medium. He cannot be recognized in the form of a point at all.

Student: Even then it is said; three of his legs are in nectar and one leg goes into *Maya*.

Baba: So, what? It is correct.

Student: .....(*Shloka*).

Baba: Yes, is the corporeal part only a part of Shiv completely or is it also of the one whose body it is? Arey, he is not a corpse, is he? Is he a corpse? He has a part, too.

Student: The illumination of the world is in the seed of the world himself.

Baba: Yes.

जिज्ञासुः बाबा, ये भाई बोलते हैं जब आत्मिक स्थिति बन जाती है, आत्मिक स्थिति में फिर दुर्योधन दुःशासन की बात कैसे आती है?

बाबा: वो अपने अन्दर दिखाई पड़ता है पहले। जो अन्दर की ओर दृष्टि बन गई जिसकी... आत्मिक दृष्टि माना बहिर्मुखी या अंतर्मुखी? अंतर्मुखी। तो उसे पहले अन्दर का दुर्योधन दुःशासन दिखाई पड़ेगा या बाहर का दिखाई पड़ेगा? पहले कौनसा दिखाई पड़ेगा? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ, वो ही प्रश्न, उसी प्रश्न का जवाब दिया।

Time: 57.21-59.03

Student: Baba, this brother says that when we develop the soul conscious stage then how does the issue of *Duryodhans* and *Dushasans* arise in a soul conscious stage?

Baba: That is visible within us first of all. The one who has developed a vision to see inside....does soul conscious vision mean extrovert or introvert (the one in soul consciousness)? Introvert. So, will he first see the *Duryodhan*, *Dushasan* within himself or the outside one? Which one will he see first? (Someone said something.) Yes, the same question, I have replied to the same question.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: वी.सी.डी.-415 में आया , आत्मा जब मेल बनती है तब उसके अन्दर दुर्योधन दुःशासन का संस्कार बनती है।

बाबा: हाँ, ठीक है।

जिज्ञासु: आत्मा आत्मिक स्थिति में पहुँच चुका, अगर आत्मा आत्मिक स्थिति में आ जायेगा तो उसके अन्दर कैसे दुर्योधन दुःशासन का संस्कार बन जायेगा? दुर्योधन दुःशासन का संस्कार तो देहभान के आधार पर होता है।

बाबा: देहभान-आत्माभान के आधार पर बनता है लेकिन आत्मा इतनी अलग दिखाई पड़े कि शरीर अलग दिखाई पड़े और आत्मा अलग दिखाई पड़े। (किसी ने कुछ कहा।) हाँजी ऐसी स्टेज होनी चाहिये।

जिज्ञासु: तब दुर्योधन दुःशासन का फीलिंग़ नहीं आयेगा?

बाबा: किस बात का दुर्योधन दुःशासन? आत्मा ने अपने को पाँच तत्वों से अलग कर लिया। पाँच तत्वों के आकर्षण से अलग कर लिया।

Student: It has been mentioned in the VCD No.415 that when a soul becomes a male, then it develops the *sanskars* of *Duryodhan*, *Dushasan*.

Baba: Yes, it is correct.

Student: If a soul has reached the soul conscious stage; if a soul develops the soul conscious stage, then how will the *sanskars* of *Duryodhan* and *Dushasan* develop in it? *Sanskars* of *Duryodhan* and *Dushasan* are on the basis of body consciousness.

Baba: It develops on the basis of body consciousness and soul consciousness. But the soul should appear to be so different that the body and the soul should be seen as two separate entities. (Someone said something.) Yes, the stage should be like this.

Student: Will the feeling of *Duryodhan*, *Dushasan* not arise then?

Baba: How will they remain *Duryodhan*, *Dushasan*? The soul separated itself from the five elements. It separated itself from the attraction of the five elements (in that stage).

समयः 59.42-1.01.22

जिज्ञासुः बाबा एक मुरली में हम पढ़ा था कि शिवबाबा अकर्ता नहीं है, असोचता है क्योंकि कर्ता रूप में ज्ञान सुनाते हैं तो मुंह यूज करते हैं। और फिर जब और-और कर्मेन्द्रियों से काम करता है वो भी काम करता है तो अकर्ता तो नहीं है, वो कर्ता है।

बाबा: अकर्ता इसलिये हैं - कर्म किया किया न किया, उसका प्रभाव उस आत्मा के ऊपर नहीं पड़ता। पाप कर्म और पुण्य कर्म नहीं बनता। देखते हुए न देखना, सुनते हुए न सुनना। सारी दुनिया ग्लानि करती रहे, सारी दुनिया एक तरफ और एक आत्मा दूसरी तरफ।

Time: 59.42-1.01.22

Student: Baba, I had read in a *Murli*, Shivbaba is not *akarta* (one who does not perform actions), but He is *asochta* (one who does not think) because when He narrates knowledge in the form of a *karta* (a doer) He uses the mouth. And when He works through other organs of action, he performs action; so He is not *akarta*, (but) He is a *karta*.

Baba: He is *akarta* because it is one and the same whether He performs the action or not, it does not have any influence on the soul. It does not result into sinful action or a noble deed.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Not to see while observing, not to listen while hearing. The entire world may continue to defame, the entire world may be on one side and one soul may be on the other side.

जिज्ञासु: माना कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हैं कर्म करते हुए भी...

बाबा: उसके प्रभाव से प्रभावित नहीं होता।

जिज्ञासु: प्रभाव से प्रभावित नहीं होता उसके लिये अकर्ता बन जाता है।

बाबा: हाँजी।

जिज्ञासु: वास्तव में कर्ता है।

बाबा: करनकरावनहार है नहीं? अरे काम तो करे लेकिन काम ऐसा करे जो उसका प्रभाव दूसरों के तरह न हो। रिजल्ट, जो दूसरे काम कर रहे हैं वैसा ही अगर रिजल्ट आये तो फिर कर्म करने में अंतर क्या रहा? कर्मयोगी का कर्म और कर्मभोगी का कर्म - उसमें अंतर नहीं होगा?

Student: It means that despite performing actions through the organs of action....
Baba: He is not influenced by its effect.
Student: He is not influenced, therefore He becomes *akarta.*
Baba: Yes.
Student: Actually, He is a *karta*.
Baba: Is He *Karan Karaavanhaar* (the doer and the enabler) or not? Arey, He should perform actions, but He should perform such actions that its effect should not be like the others. In case of result, if the result of His actions is like the result of actions performed by others, then what is the difference between their actions? Will there not be a difference between the actions of a *karmayogi* (the one who remains in remembrance while performing actions) and the actions of a *karmabhogi* (one who seeks bodily pleasures while performing actions)?

……..……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info